[illegible] व्यक्त करती है लेकिन साहित्य में उसके विशिष्ट [illegible] से विशेष अर्थ का प्रकाशन होता है।

प्रश्न—टी० एस० इलियट का परिचय देकर उसके विचारों का परिचय दीजिए।

टी० एस० इलियट—वस्तुतः टी० एस० इलियट बीसवीं शताब्दी का सर्वाधिक उल्लेखनीय आलोचक माना जाता है और उसने निर्विवाद रूप से आधुनिक पाश्चात्य आलोचना का सर्वाधिक प्रभावित किया है। वह बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार और एक ही साथ कवि, नाटककार, आलोचक, निबन्धकार एवं उच्च-कोटि का विचारक था। इलियट की गई उल्लेखनीय आलोचनात्मक कृतियाँ कही जाती हैं पर उसकी बहुचर्चित कृति परम्परा और व्यक्तिगत प्रतिभा (Tradition and Individual) है। यद्यपि इलियट की कविता स्वच्छंदतावादी थी और वह स्वयं उन्नीसवीं शताब्दी के फ्रांसीसी प्रतीकवादियों से प्रभावित था लेकिन उसने सन् 1928 में प्रकाशित अपनी एक कृति की भूमिका में यह घोषणा की थी कि राजनीति में मैं राजतन्त्रवादी, धर्म में एंग्लो कैथालिक और साहित्य में शास्त्रवादी था।' इस प्रकार उसने शास्त्रवाद (क्लासिक) को एक नवीन संदर्भ देने का प्रयत्न करते हुए क्लासिक का अर्थ प्रौढ़ता परिपक्वता से ग्रहण किया और क्लासिक की सृष्टि तभी संभव मानी है जबकि सभ्य परिपक्व हो, भाषा और साहित्य प्रौढ़ हो तथा वह परिपक्व मस्तिष्क की रचना हो इस प्रकार इलियट ने मस्तिष्क की प्रौढ़ता, भाषा की प्रौढ़ता और शैली की पूर्णता को क्लासिकल साहित्य का गुण माना है।

इलियट ने कलाकार के लिए जातीय परम्परा और ऐतिहासिक बोध की आवश्यकता पर जोर देते हुए भी परम्परा का व्यापक अर्थ ही ग्रहण किया। उसका यही कहना है कि परम्परा को हम पूर्वजों से विरासत में नहीं प्राप्त कर सकते बल्कि उसके लिए ऐतिहासिक बोध का होना आवश्यक है और यह ऐतिहासिक बोध की भावना काल निरपेक्ष एवं काल सापेक्ष की पृथक्-पृथक् तथा दोनों की समन्वित भावना है

Scanned with CamScanner

इलियट के कहने का अभिप्राय यह है कि 'जैसे कोई नया कवि परम्परा से प्रभावित होता है, वैसे ही परम्परागत क्रम भी नवीन से प्रभावित होता है और वर्तमान के कारण अतीत में परिवर्तन होता है और अतीत के द्वारा वर्तमान निर्देशित होता है तथा जो कवि उससे अवगत होता है, वह महान् कठिनाइयों और उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक रहता है।' साथ ही उसने कला की निर्वैयक्तिकता के सम्बन्ध में विचार प्रकट करते हुए कहा है कि 'जो अधिक मूल्यवान है, उसके लिए कवि को सतत् आत्मसमर्पण करते रहना चाहिए। यह सतत् आत्मसमर्पण ही कलाकार की प्रगति है जो उसके व्यक्तित्व का सतत् विरोधा है।' इस प्रकार निर्वैयक्तिकता की दशा में कला विज्ञान के निकट पहुँच सकती है और वह यह भी कहता है कि कविता का वैशिष्टद्य व्यक्तिगत मनोभावों की उत्कृष्टता पर निर्भर न होकर कलात्मक प्रक्रिया की उत्कृष्टता पर निर्भर है तथा 'कविता भावों का उन्मोचन नहीं, वरन् उससे पलायन है, कविता व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं, वरन् व्यक्तित्व से पलायन है।'

वस्तुत: इलियट ने "लिखित शब्दों द्वारा किसी कलाकृति की व्याख्या और उसका प्रतिपादन करने को आलोचना कहा है' लेकिन वह आलोचना को कोई स्वत: प्रयोजन न मानकर मैथ्यू आर्नल्ड के विचारों का खंडन करते हुए कहता है कि आलोचना का प्रयोजन है किसी कलाकृति की व्याख्या करना और रुचि का परिष्कार करना। इलियट ने आलोचक का पूर्वाग्रहों से मुक्त रहकर अपने सहयोगियों के साथ अपने विचारों की तुलना करते हुए यथार्थ तक पहुँचना आवश्यक माना है। साथ ही उसने यह भी कहा है कि आलोचना शक्ति की प्रबलता रखने वाले सर्जनात्मक लेखक ही श्रेष्ठ माने जाते हैं और आलोचना को सर्वदा ही कलाकार के सृजनात्मक प्रक्रिया में सहायक होना चाहिए। इतना ही नहीं इलियट ने आदर्श आलोचक के लिए भावावेश के स्थान में तथ्यबोध (सैंस ऑफ फैक्ट) की आवश्यकता प्रतिपादित की है और व्याख्यात्मक आलोचना को महत्वपूर्ण मानने हुए, सामयिक जगत की 'परेशानी; भीषणता और महत्ता को अभिव्यक्ति प्रदान करने को काव्य का लक्ष्य बतलाया है। इसी प्रकार इलियट के आधुनिक कविता की दुर्बोधन के अनेक कारणों का उल्लेख करते हुए 'जंगल में किसी जंगली मनुष्य द्वारा ढोल पीट जाने के साथ ही साथ' कविता का उद्भव माना है। इस प्रकार टी० एस० इलियट को बीसवीं शताब्दी का सर्वाधिक प्रभाशाली आलोचक कहा जाता है और पश्चिम की आलोजना में नूतन प्रवृत्तियों का प्रादुर्भाव इलियट से ही होता है।

निष्कर्ष

उक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि पाश्चात्य आलोचना एवं काव्यशास्त्र का शनैःशनैः सम्यक् विकास हुआ है और उसकी उपलब्धियाँ निर्विवाद रूप से महत्वपूर्ण हैं।

Scanned with CamScanner